AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

विनोवा भावे का शैक्षिक विमर्श

ORIGINAL ARTICLE

Author
प्रतिभा यादव
शोधार्थी
आजीवन शिक्षा प्रसार एवं समाज कार्य अध्ययनशाला
जीवाजी विश्वविद्यालय
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध सार

शिक्षा मानव जीवन को उत्कृष्ट बनाने का सर्वोत्तम साधन है शिक्षा प्राप्त करके ही मानव श्रेष्ठ प्राणी के रूप मे अपने जीवन में प्रखरता, सम्यकवादी, शीर्षता एवं सौन्दर्यता शिक्षा के द्वारा ही सम्भव कर सकता है। शिक्षा प्रक्रिया के दौरान भारत ज्ञान तथा कौशल के द्वारा ही व्यक्ति अपने जीवन की विविध समस्याओं का समाधान खोज सके। 19 वी शताब्दी के आखिरी दशक में बंगाल और महाराष्ट्र में वैचारिक मंथन चल रहा था, नये और पुराने विचारधाराओं में संघर्ष चल रहा था। देश के नवजागरण में इन दिनो की विचारधारा का बहुत बडा योगदान रहा, इसी क्रम में एक ऐसी शख्सियत का नाम आता है 'आचार्य विनोबा भावे'। विनोवा ने शिक्षा के दो स्वरूपो का वर्णन किया पहली आन्तरिक शिक्षा एवं दूसरी बाहय शिक्षा। इसका तात्पर्य यह कदापि नही है कि ये दोनो एक दूसरे के विल्कुल विपरीत है वस्तुतः सच्ची शिक्षा दोनो प्रकार की शिक्षाओ का सम्मेलन है।

मुख्य शब्द

शिक्षा, विद्यार्थी, विनाबा भावे, समाज.

प्रस्तावना

विनोवा जी की सम्पूर्ण शिक्षा सीखने की प्रकिया पर बल देती है। उनकी दृष्टि से सीखना एक नैसर्गिक प्रक्रिया है जो पूर्ण जीवन किसी न किसी रूप मे चलती रहती है। अतः शिक्षा की प्रकिया जन्म से लेकर मृत्यु तक चलने का एक साधन है। यह तभी नैसर्गिक कही जायेगी जव सीखने की प्रक्रिया इस प्रकार की हो कि विद्यार्थियो को पता ही ना चले वह कुछ सीख रहा है, जिस प्रकार एक तोता अन्दर एवं स्वाभाविक रूप से स्फुलित होता है। विनोवा जी इस वात से सहमत नही थे कि आज जिस प्रकार किताबो के माध्यम से विद्यार्थियों में ज्ञान की समृद्वि तो होती है परन्तु चिन्तन या दार्शनिक विचार धारा उदय नही हो सकती है, परन्तु भारतीय परिवेश इस प्रकार की शिक्षा को स्थायी नही मानती है।

समस्या का औचित्य

आधुनिक समय में भारत की स्थिति से कोई भी अनभिज्ञ नही है। भारत में तप, त्याग प्रेम सदभाव आदि सदवृत्तियो का परिचायक था, वही अब नवीन भारत स्वार्थ, द्वेष, घृणा आदि दुष्प्रवृत्तियो से ग्रसित होता जा रहा है। हमने विकास तो किया परन्तु हमने अपने आदर्शो एवं मूल्यो को विस्मृत करते जा रहें है। आजादी के पश्चात् शिक्षा के क्षेत्र में परिमाणात्मक विकास तो हुआ है, परन्तु गुणात्मक विकास की अभी भी जरूरत है। हम अपने आदर्शो और मूल्यों की कब्र पर विकास की अकाशमार्गीय इमारत खड़ी कर रहे है।

संत विनोवा भावे ने अपने समय की परिस्थति को उभारने के लिये अनेक लेख लिखे। इसके माध्यम से लोग उनकी विचारधाराइें एवं गतिविधियों से पचित होकर इसके माध्यम से लोग उनकी विचारण्धाराइो एवं गतिविधियो से परिचित होकर सत्यनिष्ठ को पहचान सके। इन्होने अपने लेखो के माध्यम से समाज में फैली अनेक बुराइयों की स्पष्टता से चर्चा की है।

शोधार्थी की दृष्टि से यह विषय अत्यधिक उपर्युक्त लगता है। ऐसे तर्क संगत विषय पर औचित्यपूर्ण एवं भौतिक वातावरण, अत्यधिक बढती प्रतिस्पर्द्धा अनुशासन हीनता, छात्रो में बढता असंतोष, दोषपूर्ण परीक्षा व्यवस्था शिक्षा के लिये एक अभिशाप है। शैक्षिक संस्थाओं पर बढता सरकारी व निजी शिकंजा छात्र एवं शिक्षको के मध्य वैमनुष्यता एक समस्या है। संत विनोवा भावे एक ऐसे युगदृष्टा हुये है जिन्होने वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के दोषो का उपाय आज के लगभग 80 वर्ष पूर्व खोज लिया था। शोधार्थी के मन में अनेको प्रश्न उत्पन्न हुये जैसेः–

- क्या आधुनिक शिक्षा व्यवस्था से दोषो का हल सम्भव है?
- क्या शिक्षण को जीवन कौशल से नही जोड़ा जा सकता है?
- क्या शिक्षक व शिक्षार्थी के मध्य भगवत वातावरण बनाया जा सकता है?
- क्या शिक्षण व्यवस्था में भक्तिमार्ग को स्थान नही होना चाहियें?
- क्या शिक्षण व्यवस्था मातृभाषा के माध्यम से नही करायी जा सकती है?
- क्या शिक्षा को व्यवसायो से नही जोडा जाना चाहियें?

समस्या कथनः– 'विनोबा का शैक्षिक विमर्श'

शोध अध्ययन का उद्देश्य

समस्या कथन की पूर्ति हेतु शोधकर्मी द्वारा प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्य को शामिल किया गया हैः

1. आचार्य विनोवा भावे के शैक्षिक विमर्श का शिक्षा के अर्थ के सन्दर्भ में अध्ययन करना।
2. आचार्य विनोवा भावे के शैक्षिक विमर्श का शिक्षा के उद्देश्य के सन्दर्भ में अध्ययन करना।
3. आचार्य विनोवा भावे के शैक्षिक विमर्श का शिक्षा के माध्यम के सन्दर्भ मे अध्ययन करना।
4. आचार्य विनोवा भावे के शैक्षिक विमर्श को पाठयक्रम के सन्दर्भ मे अध्ययन करना।
5. आचार्य विनोवा भावे के शैक्षिक विमर्श को शिक्षण पद्वति के सन्दर्भ मे अध्ययन करना।
6. आचार्य विनोवा भावे के शैक्षिक विमर्श को विद्यार्थियो के सन्दर्भ मे अध्ययन करना।
7. आचार्य विनोवा भावे के शैक्षिक विमर्श को शिक्षको के संदर्भ मे अध्ययन करना।
8. आचार्य विनोवा भावे के शैक्षिक विमर्श को शिक्षक छात्र सम्बन्ध के सन्दर्भ में अध्ययन करना।
9. आचार्य विनोवा भावे के शैक्षिक विमर्श को छात्र अनुशासन के सन्दर्भ मे अध्ययन करना।
10. आचार्य विनोवा भावे के शैक्षिक विमर्श का शिक्षा केन्द्र के सन्दर्भ अध्ययन करना।
11. आचार्य विनोवा भावे के शैक्षिक विमर्श का स्त्री शिक्षा के सन्दर्भ मे अध्ययन करना।
12. आचार्य विनोवा भावे के शैक्षिक विमर्श को शिक्षा के साधन के सन्दर्भ में अध्ययन करना।
13. आचार्य विनोवा भावे के शैक्षिक विमर्श को नई तामील के सन्दर्भ में अध्ययन करना।

शोध प्रश्न

1. क्या आचार्य विनोवा भावे के शैक्षिक विमर्श–शिक्षा के माध्यम के सन्दर्भ में निहित है?
2. क्या आचार्य विनोवा भावे के शैक्षिक विमर्श–शिक्षा के उद्देश्य के सन्दर्भ में निहित है?
3. क्या आचार्य विनोवा भावे के शैक्षिक विमर्श–पाठयक्रम के सन्दर्भ में निहित है?

4. क्या आचार्य विनोवा भावे के शैक्षिक विमर्श–शिक्षण पद्वति के सन्दर्भ में निहित है?
5. क्या आचार्य विनोवा भावे के शैक्षिक विमर्श–शिक्षक छात्र सम्बन्ध के सन्दर्भ में निहित है?
6. क्या आचार्य विनोवा भावे के शैक्षिक विमर्श–छात्र अनुशासन के सन्दर्भ में निहित है?
7. क्या आचार्य विनोवा भावे के शैक्षिक विमर्श–स्त्री शिक्षा के सन्दर्भ में निहित है?
8. क्या आचार्य विनोवा भावे के शैक्षिक विमर्श–के साधनो के सन्दर्भ में निहित है?
9. क्या आचार्य विनोवा भावे के शैक्षिक विमर्श–नई तामील के सन्दर्भ में निहित है?
10. क्या आचार्य विनोवा भावे के शैक्षिक विमर्श–वर्तमान में भारतीय शैक्षिक परस्थितियों में प्रासांगिक है?

शोध विधि

किसी शोधकार्य की सफलता उसकी पूर्वयोजना और क्रिया विधि पर आधारित होती है। अनुसंधान विधि के क्षेत्र में मुख्यतौर पर इस शोध मे दो विधियों का प्रयोग किया गया है परिणात्मक एवं गुणात्मक।

प्रस्तुत शोध कार्य मुख्यतः स्वाध्यय एवं विमर्श पर आधारित है। यह शोध एंतिहासिक एवं दार्शनिक क्षेत्र से सम्बन्धित होने के कारण आचार्य विनोवा भावे द्वारा सृजित साहित्य, उनके विमर्श एवं अन्य लेखकों एवं चिन्तको द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन दार्शनिक विधि पर आधारित है।

साहित्यक श्रोत

प्रस्तुत शोध अध्ययन में साहित्य श्रोच मे प्रमाणिक एवं गौण श्रोत को सम्मलित किया गया है। शोधार्थी द्वारा आचार्य विनोवा भावे के द्वारा रचित रचनायें तथा समकालीन विचारको द्वारा विनोबा पर रचित रचनायें एवं सम्बन्धित साहित्य को सम्मलित किया गया है।

शोध से प्राप्त विवेचना

- सन्त विनोवा भावे ने वर्तमान भौतिक संसाधनो को स्थान देकर शिक्षा को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया। शिक्षा को नवीनतम रूप देने के लिये नवीन यंन्त्रो एवं कार्यशालाओं को सम्लित करने पर जोर दिया।
- सन्त विनोवा भावे के शिक्षण में हृदय में स्वयं एवं सहयोग की भावना को प्रमुख स्थान दिया गया तथा इसके साथ ही शिक्षा संस्थानो को व्यवसय एवं वैज्ञानिकता से जोड़ना इनकी प्रथम देन है।
- सन्त विनोवा भावे ने नई बुनियादी शिक्षा के अर्न्तगत बाल शिक्षण को अधिक रोचक बनाने पर विचार किया। वे नवीन पीढी के हृदय में परिवर्तन द्वारा समाज को एक नई चेतना देना चाहते थे।
- सन्त विनोवा भावे अग्रिम भविष्य के समाज में नई चित्तवृत्तियों को निर्माण कर नई जिज्ञासा उत्पन्न करना चाहते थे।
- सन्त विनोवा भावे ने एक घण्टे का स्कूल दो घण्टे का, महाविद्यालय की नवीन परिकल्पना देकर शिक्षा को अधिक लोकतांत्रिक वनाने का प्रयास किया।
- आचार्य विनोवा भावे स्वतंत्र एवं सुन्दर हृदय के परिणाम है ''आचार्यकुल'' इसमें दो खण्ड है आचार्य और कुल।

आचार्य का शाब्दिक अर्थ है आचरण, विचरण, विमर्श, प्रचार, दृष्टि करने वाले तपस्तीय आचार्य के सूचक है। विनोवा जी ने आचार्यकुल के द्वारा शिक्षको को अहिंसक क्रान्ति के अतिरिक्त सम्पूर्ण समाज में क्रान्ति लाने की अपेक्षा की है। स्पस्ट है बिना आचार्या के तपस्वीय, चरित्रवान, विचारवान लोगों के विचार से समाज में परिवर्तन नामुमकिन है। पहले गुणो का विकास करना बाद में समाज से आर्शीवाद प्राप्त करना तभी शिक्षको द्वारा अहिंसक क्रान्ति हो सकती है। वास्तव में समाज के कल्याण के लियें पक्षपातमुक्त, कर्त्व्यनिष्ठ अध्यापकों को संगठन अनिवार्य है।

- संत विनोबा भावे ने सम्पूर्ण जीवन भर शिक्षण कार्य में संलग्न रहे।

- संत विनाबा भावे के लिये नई तालीम वस्तु, मूल्य परिवर्तन को पोशक है। उन्होने समाज के वास्तविक परिवर्तन लाने का प्रयास किया है।
- संत विनोवा भावे को नवीन तालीम दृष्टि का विशाल दृष्टिकोण समाज में सुख, सरसरूप में भावी भारतीय शिक्षा व जीवनमूल्यों का रूपान्तरण दिखाई देता है।
- संत विनोवा भावे के अनुसार प्रत्येक व्यवसाय का साधन दैवीय शास्त्र की दृष्टि से देखने योग्य है। उनके विवेकानुसार यदि पैतृक कार्य को व्यक्ति करता है एवं उसके अन्दर कर्मयोग को जोड़ दिया जाये तो व्यक्ति सहर्ष कार्य करता है, जिस प्रकार चमड़े के जूते गाँठने वाला व्यक्ति जूते गाँठने का कार्य हर्ष के साथ करेगा उससे हीनता को महसूस नही करेगा। जरूरत इस समय समर्पित अध्यापको की है जो अपने कर्तव्य को निष्ठा से कर सके।
- आचार्य विनोवा भावे सर्वोदयी विचारधारा के पक्ष पोषक थे। देश में उत्पन्न हुई गम्भीर उलझन को सुलझाने के लिये विनोवा भावे ने पहला कदम उठाया।
- आचार्य विनोवा भावे ने विधार्थी को प्रज्ञा स्वयंभू बनाने एवं स्वतंत्र विचारक बनाने की वात की। विधार्थी को ऐसी तालीम की जरूरत है जिससे वह स्वयं ही ज्ञान प्राप्ति करने में सक्षम हो सके।
- आचार्य विनोवा भावे स्त्री मुक्ति के बजाय स्त्री शक्ति जागरण पर वल देते थे, जिससे वे बाद–विबाद में भी प्रखर हो जिससे वे अपनी वात सिद्ध कर मनवा सके। स्त्रियॉ चरित्रवान इतनी हो कि चरित्रगत प्रलोभनो से दूर रह सके। बृहम्चारिणी स्त्रियो के लिये ब्रहम विद्या मंन्दिर आश्रम की स्थापना उनका प्रमुख प्रयोग है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र के विभिन्न उद्देश्यो के विवेचना के उपरान्त यह निष्कर्ष निकलता है कि आचार्य विनोवा भावे के शैक्षिक विचार आज भी 21वी शताब्दी में भी आधुनिक शिक्षा के सभी संन्दर्भो के व्यवस्थापन एवं संचालन में भी ग्रहणीय है। चाहे शिक्षा के अर्थ का निर्धारण हो या उन उद्देश्यो की प्रभावी प्रति के लिये उठाये जाने वाले कदम हो, सभी में आचार्य जी का कहना है कि बूढा होना उम्र से नही बल्कि सीखना बंद करने से होता है, यह विचार शिक्षको और विद्यार्थिओ दोनो के लिये उपयोगी है। नयी शिक्षा नीति 2020 में भी इस बिन्दु को प्रमुखता से शिक्षा मे शामिल करते हुये शिक्षको व छात्रो को सदैव सीखते रहने के लिये प्रेरित किया गया है।

सन्दर्भ सूची

1. विनोबा भावे (1973) *''आचार्य कुल''* पंचम संस्करण, वाराणसीः सर्व सेवा संघ प्रकाशन।
2. विनोबा भावे (2010) *''तीसरी शक्ति''* सप्तम संस्करण, वाराणसीः सर्व सेवा संघ प्रकाशन।
3. शाह कान्ति(2009) *''विनोबा जीवन और कार्य''* सर्व सेवा संघ वाराणसी।
4. शाह कान्ति(2009) *''विनोबा जीवन और कार्य''* सर्व सेवा संघ वाराणसी।
5. विनोबा (1964) *''थॉटस ऑन अज्यूकेशन''* सर्व सेवा संघ वाराणसी।
6. विनोबा (2010) *''शिक्षण विचार''* सर्व सेवा संघ वाराणसी।

——==00==——